दादा भगवान प्ररूपित

माता-पिता और बच्चों का व्यवहार

दादा भगवान कथित

माता-पिता और बच्चों का व्यवहार

मूल गुजराती पुस्तक 'माबाप छोकरांनो व्यवहार' (संक्षिप्त) का हिन्दी अनुवाद

मूल गुजराती संकलन : डॉ. नीरूबहन अमीन

अनुवाद : महात्मागण

प्रकाशक : अजीत सी. पटेल
महाविदेह फाउन्डेशन
'दादा दर्शन', 5, ममतापार्क सोसायटी,
नवगुजरात कॉलेज के पीछे, उस्मानपुरा,
अहमदाबाद - ३८००१४, गुजरात
फोन - (०७९) २७५४०४०८

©
All Rights reserved - Shri Deepakbhai Desai
Trimandir, Simandhar City,
Ahmedabad-Kalol Highway, Post - Adalaj,
Dist.-Gandhinagar-382421, Gujarat, India.

प्रथम संस्करण : प्रत ३०००, अप्रैल, २००९

भाव मूल्य : 'परम विनय' और
'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : २० रुपये

लेज़र कम्पोज़ : दादा भगवान फाउन्डेशन, अहमदाबाद

मुद्रक : महाविदेह फाउन्डेशन
पार्श्वनाथ चैम्बर्स, नई रिज़र्व बैंक के पास,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८० ०१४.
फोन : (०७९) २७५४२९६४, २७५४०२१६

त्रिमंत्र

समर्पण

अनादि काल से, माँ-बाप बच्चों का व्यवहार,
राग-द्वेष के बंधन और ममता की मार।
न कह सकें, न सह सकें, जाए तो जाए कहाँ?
किस से पूछें, कौन बताए उपाय यहाँ?
उलझे थे राम, दशरथ और श्रेणिक भी,
श्रवण की मृत्यु पर, माँ-बाप की चीख निकली थी।
शादी के बाद पूछे 'गुरु' पत्नी से बार-बार,
इस त्रिकोण में क्या करूँ, बतलाओ तारणहार!
आज के बच्चे, उलझें माँ-बाप से,
बड़ा अंतर पड़ा, 'जनरेशन गेप' से।
मोक्ष का ध्येय है, करना पार संसार,
कौन बने खिवैया? नैया है मझधार!
अब तक के ज्ञानियों ने, बतलाया बैराग,
औलादवाले पड़े सोच में, कैसे बनें वीतराग?
दिखलाया नहीं किसी ने, संसार सह मोक्षमार्ग,
कलिकाल का आश्चर्य, 'दादा' ने दिया अक्रममार्ग!
संसार में रहकर भी, हो सकते हैं वीतराग,
खुद होकर दादा ने, प्रज्वलित किया चिराग।
उस चिराग की रौशनी में मोक्ष पाए मुमुक्षु,
सच्चा खोजी पाए यहाँ, निश्चय ही दिव्यचक्षु।
उस रौशनी की किरणें, प्रकाशित हैं इस ग्रंथ में,
माता-पिता बच्चों का व्यवहार सुलझे पंथ में।
दीपक से दीपक जले, प्रत्येक के घट-घट में,
जग को समर्पित यह ग्रंथ, प्राप्त करो अब झट से।

❖ ❖ ❖

'दादा भगवान' कौन ?

जून १९५८ की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर 'दादा भगवान' पूर्ण रूप से प्रकट हुए। और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्‌भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। 'मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?' इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

'व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं', इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया, बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार सिर्फ दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षु जनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्‌भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट

वे स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं है, वे तो 'ए.एम.पटेल' है। हम ज्ञानीपुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे 'दादा भगवान' हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और 'यहाँ' हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।''